JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“काशीनाथ सिंह की कहानियों में संवेदना का वैविध्य”

शोधार्थी सनोवर

हिंदी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटीए अलीगढ़

उत्तर प्रदेशए भारत

शोध साररू. समकालीन कहानीकारों में काशीनाथ सिंह का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। विषयवस्तु के सामाजिक पहलु और समाज के प्रति गहरी आत्मीयता से युक्त जवाब देने के क्षमता की दृष्टि से, काशीनाथ सिंह प्रेमचंद की लेखन परंपरा के कथाकार हैं। उनके आख्यान वास्तविकता और अनुभव को व्यक्त करते हैं और चरित्रों के सामाजिक मानदंडों को उभारते हुए घटनाओं और परिस्थितियों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं किए भारतीय समाज की जटिल सामाजिक संरचना का साक्षात्कार होता है। काशीनाथ सिंह की कहानियाँ मानवता, प्राकृतिक संबंध और तकनीकी प्रगति के त्रिकोणी आदि के मध्यस्थ विचारों को निरंतर उखाड़ती हुई वर्तमान की भोगवादी संस्कृति, व्यक्तिगत लालसा, एकांत विकास की परिकल्पना, और सामुदायिक भावनाओं के प्रति के खोखलेपन की आलोचना करती हैं।

बीज शब्दरू. काशीनाथ सिंहएकहानियांए संवेदनाए सामाजिकताए बदलते मानवीय मूल्यए मध्यवर्गीए आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावनारू. साहित्य विभिन्न सामाजिक मूल्यों का परिचय करता है और समय, समाज और मानव मूल्यों को साहित्य में व्यक्त करता है। हिंदी कथा.साहित्य में इन मूल्यों का उद्घाटन विस्तार से किया जाता है। परिवेश के प्रति जागरूकता के कारण कहानीकार का आंतरिक भावनाओं से संबंधित होना सामाजिकता से जुड़ने का स्थान होता है। काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में मानवीय संवेदना के महत्व को उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने उस व्यक्ति की कहानी सुनाई हैएजो समाज के सबसे निचले स्तर पर विभिन्न परिस्थितियों में रहते हुए अलग-अलग रूपों में जीवन व्यतीत करता है। जिसमें कुछ शौर्य और समझदारी होती है और कुछ में बची.कुची आत्मनिर्भरता ।

काशीनाथ सिंह की वास्तविकता के अनुसार चित्रण की विशेषता मूल रूप से उनके सामाजिक दृष्टिकोण में है, जो उनकी कहानियों को अत्यंत मूल्यवान बनाता है। उनके लेखन में संवेदना का गहन विश्लेषण होने के कारण उनकी कहानियों में आदमी की भावनाओंए मानसिकता और उनके समाज में स्थिति का सटीक चित्र प्रस्तुत है। इससे उनकी कथाओं में एक अद्वितीय सृजनात्मकता और सामाजिक विकास के मूल्यों की गहनता प्रतिबिम्बित होती है। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी कथा साहित्य में पुराने मूल्यों के स्थान पर नए मूल्यों का जन्म हुआ। इन मूल्यों में आर्थिक महत्वता के कारण महानगरीय जीवन में व्यक्ति अपने नाम के बजाय जाति या पद से अपनी पहचान बनाता है क्योंकि व्यक्ति के पास इतनी फुर्सत ही नहीं होती कि वह अपने वैयाक्तिक को झाँककर देख सके। वर्तमान समय में इस भौतिकवादी मानसिकता से बचना अत्यंत कठिन है।

आधुनिक समय में हिंदी कथा साहित्य शहरी जीवन की व्यस्तताओं के प्रति व्यक्ति के अकेलेपन से जुड़े दुःख को प्रकट करता है। मांए बेटीए बेटा और पति आदि सभी संबंधों में भी बदलाव दिखाई पड़ता है। शहरी जीवन में खोखलेपन के सिवा कुछ बचा नहीं है। फिर भी हम देखते हैं कि बहुत से ग्रामीण लोग अपनी बोरी बिस्तर साथ रोज़ी रोटी की तलाश में शहर आते हैं। जीवन यापन की मजबूरी व्यक्ति को गांव छोड़ने पर विवश करती हैं। शहरी जीवन के मैदान में जब ग्रामीण को जंग लड़नी पड़ती है तो वह प्रायः मुंह की ही खाता है। शहरों के बड़े-बड़े महल एहोटल एअच्छे कपड़े और अच्छा खाना उसके लिए नहीं होते बल्कि यह सब बड़े लोगों के भाग्य में होते हैं। बड़े लोग गांव के साथ शहर में भी सुख से जीवन यापन करते हैं। गरीब

व्यक्ति के लिए चाहे गांव हो या शहर दोनों ओर गरीबीए भूख और तंगहाली की स्थिति विघमान है। मध्यवर्गीय व्यक्ति जो आर्थिक दृष्टि से सामान्य होने के कारण निरंतर पूंजीवादी होने का स्वप्न देखता रहता है। वह प्रायः वास्तविकता में पूरे नहीं होते और चकनाचूर हो जाते हैं।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में ग्रामीण और शहरी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विवेचना की हैए जहां वे मानवीय संबंधों और मूल्यों के महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाते हैं। कहानी श्ये तीन घर' गांव और शहरी जीवन के मध्य सामाजिक मूल्यों के विभिन्नताओं को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करती है “गांव की पढ़ाई के बाद वे बिछड़ गए थे. एक दूसरे से। विपत शहर में ऐसे नेता के रूप में उभर आए थे जिनके बयान अखबारों में छपते थे और कभी-कभी बड़े नेताओं के साथ मंच पर खड़े भाषण करते उनके फोटो भी दिखाई पड़ते थे उन्हें इतना पता था कि वह एक दो बार चुनाव के मैदान में भी उतर चुके थे लेकिन सफल नहीं हो सके थे इस पर उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ था।”[1] लेखक की कहानियों में गांव जीवन की मिट्टी की सुगंध और उसकी महत्वता को सार्थकता से दर्शाने का प्रयास देखा जा सकता है। उन्होंने गांव की सामाजिक संरचनाए संवेदना और संबंधों के विविध पहलुओं का चित्रण किया है। कहानीकार की कहानियों में लुप्त होती नस्ल के लोगों के भावनात्मक और सामाजिक संवेदना से परिचित कराया गया है जो उन्हें गांव की मिट्टी से जोड़ता है ।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में बदलते सामाजिक परिस्थितियों और मानवीय मूल्यों के परिवर्तन के साथ ही नगरीकरणए आर्थिक होड़ए तकनीकी प्रगति के प्रभावोंए व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को भी अभिव्यक्त किया है। ‘आखिरी रात' कहानी में नवविवाहित जोड़े के प्रेम संबंध जीवन में आर्थिक प्रभाव और सामाजिक दबाव के कारण आयी दरार का अत्यंत मार्मिक चित्र अंकित है। प्रेमपूर्ण एवं रोमांसयुक्त वैवाहिक संबंध में एकाकीपन और खालीपन की भावना उत्पन्न हो जाती है। इस कहानी में एक व्यक्ति की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उसे पारिवारिक जरूरत को पूरा नहीं कर पाने में असमर्थ और बेबस होते हुए दर्शाया गया हैए “आरंभ टूट जाता है। एक खामोशी व्याप्त होती है.खामोशी जो कहीं बाहर नहीं है हमारे भीतर है। हम कड़ी खोजने लगते हैं। पत्नी इतने दिन मेरे साथ रही है। मैंने उनके लिए कुछ भी नहीं किया है. कर ही नहीं सकता हूं। और जब आज जा रही हैं तब भी मैं उलझन अनुभव कर रहा हूं।”[2]

व्यक्ति के जीवन में कृत्रिमता और मानवीय संबंधों में कैसे बदलाव आ रहा है 'आखिरी रात' कहानी में यथार्थ रूप से चित्रित है। व्यापारिक संवृत्ति ने समाज को आर्थिक और सामाजिक संरचना को न केवल प्रभावित किया है बल्कि परिवार के सदस्यों में आत्मविश्वास की कमी और विडम्बनाओं को उजागर किया है। लेखक की कहानियों में भूमण्डलीकरण और बाज़ारवाद का स्पष्ट विवेचन उल्लेखित है। इनकी कहानियों में तत्कालीन समयदृसमाज की उपस्थितिए उस अनिवार्य ऐतिहासिक सत्य को चित्रित करने जैसी हैए जिसका त्रासद विखंडन उत्तर आधुनिकता वाले दौर में उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के पश्चात होता है। औद्योगीकरण के दौर ने मनुष्य को यंत्रोंन्मुख बना दिया। जिससे उसकी मानसिकताए जीवन शैली यंत्राधारित हो गई। इनकी औद्योगीकरण ने मनुष्य के सौंदर्यबोध को नष्ट कर दिया है। जो सौंदर्यबोध मनुष्य के भीतर विघमान था वो गायब हो रहा है। हम चारों ओर जो औद्योगीकरण को देख रहे हैं ए वह हमारी संवेदनशीलता को मार रहा है और मारता चला आ रहा है। इस तरह हम देखते हैं कि 'सुख' कहानी में अनुभव का पहलू इतना महत्वपूर्ण है कि भोला बाबू की पूरी दुनिया उसके जीवन की रंग.बिरंगी छवियों में ही बसी होती है। उसके आसपास की घासए चारदीवारए पहाड़ियां एबादल और भोला बाबू का मार्किन का कुर्ताए इस परिपेक्ष्य में भोला बाबू का व्यक्तित्व भी ऐसा लगता है जैसे जिस संवेदनशीलता की बात लेखक करता है उसके भावनात्मक अनुभव की चिंता भोला बाबू के विचारों में इस तरह प्रश्न करती हैए "हाय! दुनिया कितनी बदल गई है।"[3] अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि दुनिया में परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के संदर्भ में आने वाले व्यक्ति का स्वभाव मूल प्रकृति से भिन्न हो गया है।

समाज में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति होते हैं। जिनमें कुछ सकारात्मक और नकारामक प्रवृत्तियों के पक्षपाती होते हैं। शहरी जीवन की यांत्रिकता और व्यवस्था से मध्यवर्गीय व्यक्ति इतना आत्म संतोष में डूब जाता है कि उसे दूसरों का ध्यान नहीं होता है। कहानीकार काशीनाथ सिंह ने 'अपना रास्ता लो बाबा' के माध्यम से धन संपत्ति की अधिकता से उत्पन्न अमानवीयता का बोध कराया हैए ""छोड़ो चलो!"३३ण सारी ज़िंदगी और सारी दुनिया और सारा ज़माना तुम्हारे सामने पड़ा है और एक बेमतलब के बूढ़े को लेकर मुंह लटकाए बैठे हैं।"[4] समाज में रहने वालों के व्यवहार और मानसिकता को इस कहानी का केंद्र बनाया गया है।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानी 'सूचना' में सामाजिक विभाजनए मानवता की कमी और स्वार्थपरता को व्याख्यायित किया है। कहानी में बाढ़ और भुखमरी की आपात स्थितियों में मानव विभाजन और स्वार्थ की बढ़ती हुई त्रासदी का चित्रण है जिससे साधारण जन परेशान हो जाता हैए "जब से बाढ़ आई हैएरिक्शे मुश्किल से मिलते हैं। हालांकि यही एक सड़क है एरिक्शे मुश्किल से मिलते हैं। हालांकि यही एक सड़क है जिसे बाढ़ ने बख्शा है। रिक्शोंए इक्कोए तांगोंएतांगोंएसाइकिलोंए कारों और स्कूटरों की जमघट हैए हार्न और घंटियों का गूंजता हुआ शोर हैए सवारियों की लूट हैद्दसब है लेकिन रिक्शों, के भाड़े दो गुने हो गए है इसलिए सवारियाँ थी जहाँ की तहाँ है और रिक्शे भी।"[5] 'तीन काल-कथा' के द्वितीय दृश्य 'पानी' में एक पीढ़ी वर्ग जो भूख और गरीबी से परेशान है, उसका चित्रण किया गया है। इसमें दिखाया गया है कि जनता उस व्यक्ति की भूख को दूर करने के बजाय, कुएँ की पवित्रता की चिंता करती है। पुलिस भी निठोहर को कुएँ से निकालने में समर्थ नहीं हो जाती और उसे रस्सी के फंदे में फंसाकर बाहर निकालती है। "खींचोएमैं कहता हूँएखींचो साले कोए३३ण्णनिठोहर खींच लिया जाता है। उसकी उंगलियाँ फन्दे पर कस गई हैं। जीभ और आँखें बाहर निकल आई हैं और टाँगे किसी मरे मेढ़क.सी तन गई हैं।[6] इस प्रकार निठोहर को भूख और गरीबी से मुक्ति मिल जाती है। जनता की पानी की समस्या भी हल हो जाती है।

'कविता' की नई तारीख' कहानी में काशीनाथ सिंह सामाजिक चरित्र के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं। इस कहानी में यह स्पष्ट दर्शाया गया है कि समाज में अनुचित सामाजिक मान्यताएं स्थापित हो रही हैं और मनुष्य अपने स्वाभाविक मूल्यों को भूलकर चकाचौंध की दुनिया में लिप्त होता जा रहा है। नायक की पत्नी व्यंग्य करते हुए कहती हैए "पैंट अच्छा लग रहा हैए३३इसका मतलब यह है कि बेईमानी और घूसखोरी अच्छी लगती है लेकिन दूसरे की ; चीज़ें पसन्द हैं।"[7] इस कहानी में सबसे महत्वपूर्ण स्वर यह है कि मनुष्य दूसरों को बुराई करने पर उसका विरोध सहजता से करता है, परन्तु जब अपने ही सगे संबंधी भ्रष्ट प्रशासन का हिस्सा बन चुके हों तो उसका विरोध करना सरल नहीं होता है। 'कहानी सराय मोहन की' में भारतीय सामाजिक जीवन के परंपरागत ढाँचे के टूटने की प्रक्रिया का विवेचन प्रस्तुत है। बहु बेटों के

व्यवहार से दुःखी वृद्ध बाबू साहब घर छोड़ कर चले जाते हैंएब्बाबू साहब चले जा रहे थे और पीछे मुड़कर अंधेरे में देखते भी जा रहे थे – शायद कोई चोरबत्ती! शायद कोई गुहार ! हो सकता है, प्रहलाद दौड़ा हुआ आए और पाँव पकड़कर, मांफी मांगकर, मना कर, रो-धोकर उन्हें लिवा जाए। उन्होंने में मन शुरू कर दिया कि आएगा तो मानने के पहले वे क्या. क्या कहेंगे?”[8] इस कहानी में वृद्धावस्था के वृद्धों द्वारा अनुभव की जाने वाली दुःख दशा को मार्मिक ढंग प्रस्तुत किया गया है। कहानी ‘मुसइचा’ में एक अलग प्रकार की सामाजिक समस्या नज़र आती है। कहानी का मुख्य पात्र ‘मुसइचा’ के माध्यम से वर्तमान युग के युवाओं की स्थिति की चर्चा की गई है। आज के युवाओं को विभिन्न संकटों का सामना करना पड़ता है और इसलिए वह अपने आत्मा को समाज से अलग करते हैंए “साथियो मेरी जिन्दगी के बेहतरीन दिन...कभी वापस न आनेवाले दिन रोज़गार की तलाश में ख़त्म हो गए। आपस की छीना-झपटी में। जैसे कि तुम्हारे-जैसे कि तुम्हारे हो रहे हैं ३ मैं चीर-घर से बाहर लाई हुई उस लाश की तरह हूँ जिसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है। मुझे पहचानो, मैं तुम्हारे लिए- तुम सबके लिए उस षड्यन्त्र का सबूत हो सकता हूँ जिसे जनतन्त्र कहते हैं।”[9] उसकी प्रतिक्रिया में वह बुराई के खिलाफ़ आवाज़ उठाता है और संघर्ष करता है। इस प्रकारए लेखक कहानी के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन करते दिखाई देते हैं ।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था और स्त्री की सामाजिक स्थिति को सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। 'संकट' नामक कहानी में उन्होंने विवाह संस्था में स्त्री की कठिनाईयों और संघर्षों का विवरण प्रस्तुत किया है। पत्नी को पुत्र की प्राप्ति होती है। वह कुछ दिन बाद प्रसूति गृह से बाहर आती है इसी बीच फौजी पति तीन दिन की छुट्टी लेकर घर आता है परंतु पत्नी से शारीरिक सुख न मिलने पर वह मारपीट एगाली गलौच पर उतारू हो जाता हैए श्अगर वह औरत है तो औरत की तरह रहे। यह क्या कभी छींक रही है, कभी हँस रही है, कभी जाँत पर बैठी गा रही है३३३ण्णमैं एक औरत को देखता हूँ, तो सोचता हूँ। अगर इसे होना ही था, तो यह गाय, बकरी या भैंस न होकर औरत क्यों हुई?ण्ण्ण्ण्ण्ण्सच

तो यह है संकर कि मैं औरत को हेट करता हूँ-हेट समझ रहे हो न ! एच-ए-टी, हेट! हेट माने नफ़रत करता हूँ।"[10] कहानी में सामाजिक संस्कारों और मानसिकता में बसी स्त्री छवि को प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्षतरू काशीनाथ सिंह एक उत्कृष्ट सामाजिक दायित्व के कथाकार हैं। इनकी कहानियों के पात्र सामाजिक विसंगतियों, अंतविरोधों और झूठ के साथ एक ईमानदार मनुष्य की तरह जूझते दिखाई देते हैं । इनकी कहानियाँ ऐतिहासिक आवश्यकता से उत्पन्न एक जागरूक रचनाकार की रचना हैएजिन्होंने साठोत्तरी अर्थहीनता के कई अंधेरे रास्तों से गुजर कर कहानी को सामाजिक अर्थवत्ता प्रदान की है। सामान्य आदमी को उसकी संपूर्णता में दर्शाने के साथ-साथ जीवन की गतिशीलता में नित्य बदलते संबंधों को प्रकट करने का प्रयास किया है। काशीनाथ सिंह की कहानियां शक्ति और ऊर्जा संपन्न सक्रिय मनुष्य के बीच होने का अनुभव भी कराती हैं। लेखक की कहानियों की आग उनकी अद्वितीयता का संकेत है।

सन्दर्भ :-

1ण्सिंह,काशीनाथए पहला संस्करण-2003,ष्कहनी उपखान (कहानी संग्रह)" से उद्धृतए'वे तीन घरए राजकमल प्रकाशन,नई दिल्लीए पृष्ठ संख्या-268

2ण्सिंह,काशीनाथए पहला संस्करण-2003,"कहनी उपखान" से उद्धृतए१आखिरी रात' एराजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 23

3ण्सिंह, काशीनाथए 'पहला संस्करण-2003,"कहनी उपखान" से उद्धृत 'सुखए राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -18

4ण्ण्सिंह, काशीनाथ एपहला संस्करण-2003, "कहनी उपखान" से उद्धृत ए१अपना रास्ता लो बाबा' राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 314

5णसिंह, काशीनाथए पहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत 'सूचना'ए राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 145

6णसिंह, काशीनाथएपहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत 'तीन काल कथा, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-132

7णसिंह, काशीनाथएपहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत 'कविता की नई तारीख, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 369

8णसिंह, काशीनाथए पहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत' कहानी सराय मोहन की'ए राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 338

9णसिंह,काशीनाथएपहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत 'मुसइचा', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 165-166

10णसिंह, काशीनाथएपहला संस्करण-2003,“कहनी उपखान” से उद्धृत'एसंकट', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-28-29